(Concept of Region and Regional Planning in Geography, Theoretical Framework and Scope)

नियोजन एक सामान्य संकल्पना है, लेकिन यह एक विशिष्ट सन्दर्भ का द्योतक भी है। योजना एवं नियोजन की प्रासंगिकता सर्वसाधारण की जीवन पद्धति तथा क्रियाशीलता से सदैव जुड़ी रही है। प्राकृतिक से पुनर्गठित मानवीय परिवेश एवं संलग्न नियोजनात्मक सन्दर्भ सामान्य से जटिल होता जाता है। स्वभावतः सामान्य रूप में समझी जाने वाली शब्दावली कालक्रम में पारिभाषिक एवं सकल्पनात्मक विशिष्टताओं के बहु–आयामी स्वरूपों को विकसित करती रही है। नियोजन वस्तुतः भूगोल की मूल प्रकृति, भौगोलिक ज्ञान के प्रयोग से मानव सभ्यता के परिष्करण, से सम्बन्धित है। विलियम स्टीवेन्सन (1978) के अनुसार भूगोल मात्र 'क्या, कहाँ और कैसे है' से परिभाषित नहीं होता, वरन भूगोल 'कैसा होना चाहिये' से परिभाषित होता है। 'कैसा होना चाहिये' नियोजन का प्राण सूत्र है।

योजना मनुष्य की स्वाभाविक अंतःप्रेरणा का प्रतिफल माना गया है। दूसरे शब्दों में मनुष्य की क्रियाशीलता की पृष्ठभूमि में एक निश्चित योजना के प्रति मनुष्य का प्राकृतिक रूझान रहा है। सभ्यताओं के साथ विकास की दिशाओं एवं अवस्थाओं का अनुकूलन होता रहा है। इस सन्दर्भ में मानवीय योजनाओं का परिष्करण एक ऐतिहासिक अनिवार्यता के रूप में विकसित माना जा सकता है। व्यक्ति से योजना का सम्बन्ध जैविक अन्तर्जात न होकर मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रतिबद्धता के अनुरूप माना जा सकता है। मनुष्य अपने सामाजिक संगठनात्मक परिवेश में अपने लिये भोजन संग्रह, वस्त्र की खोज तथा आवास निर्माण की प्रारम्भिक अवस्था से आधुनिक योजनाओं तक क्रियाशील बना रहा है। मानव जीवन में योजना शब्द बहुअर्थी रहा है। योजना किसी वस्तु का भौतिक प्रस्तुतीकरण है, 'कुछ करने की विधा है' या 'किसी आंशिक उद्देश्य का क्रमबद्ध विन्यास है। योजना शब्द की ये अभिव्यक्तियां सर्वज्ञात हैं।